आजीविकाएं

कच्छ में कुछ संगठन चरवाही, संसाधन संरक्षण, वर्षा आधारित खेती और दस्तकारी जैसे एक-दूसरे से बिल्कुल अलग-अलग दिखाई देने वाले सवालों पर काम कर रहे हैं। उन्होंने इस बात को समझ लिया है कि कुदरत में हर चीज एक साझा डोर से बंधी हुई है।

ऊपर : *रबारियों और उनके ऊंटों का एक रेवड़ प्रवासन के लिए रवाना हो रहा है।*

सहजीवन इन्हीं में से एक संगठन है जो बन्नी इलाके में गुज्जर और रबारी जैसे चरवाहा समुदायों के बीच काम कर रहा है। यह संगठन इन समुदायों के लिए सामुदायिक एवं आवास अधिकार तथा घास भूमि और जल संसाधनों पर अधिकार दिलाने के लिए पैरवी कर रहा है

बाएं: *बन्नी इलाके के खुले मैदान में गुज्जरों की एक सामुदायिक बैठक। इस इलाके के बहुत सारे हिस्से या तो दूसरे इलाकों से यहां आयी खरपतवार के कब्जे में जा चुके हैं या खारे हो चुके हैं।*

मध्य: *सहजीवन चरवाही मैदानों और पानी की कुंडियों को बचाने के लिए संसाधन मैपिंग में मदद दे रहा है।*

दाहिने: *चरवाही जमीनें और बाढ़ग्रस्त मैदान अभी भी बचे हुए हैं जहां मराल (फ्लेमिंगो) और तिलोर जैसे जंगली जीव-जंतु भी निवास करते हैं।*

कच्छ के ही कुछ स्थानों पर सहजीवन की कोशिशों से मवेशियों की कुछ स्थानीय नस्लें कायम रह पायी हैं जिससे समुदायों को दूध बेचने और खेती में उपयोग के लिए गाय के गोबर की रीसाइक्लिंग से आमदनी का एक जरिया मिला है। इसमें सात्विक नामक संगठन भी उनकी मदद कर रहा है जो जैविक खेती का हिमायती है (देखें चित्र ५)।

बाएं: *कांकरेज - मवेशियों की एक स्थानीय प्रजाति जो खुद को कच्छ के कठिन वातावरण के अनुसार ढाल चुकी है। इन मवेशियों को एक बहुत खास नस्ल के रूप में पहचाना जाने लगा है।*

मध्य: *लखपत इलाके में रबारियों का एक समूह जो एक डेयरी शुरू होने के फलस्वरूप १६ साल बाद घर लौट रहा है।*

दाएं: *डेयरियों के शुरू हो जाने के कारण एक दुर्भाग्यजनक बदलाव यह आया है कि अब लोग ज्यादा भैंस पालने लगे हैं, जिन्हें दूसरे जानवरों से ज्यादा पानी और चारे की जरूरत होती है।*